राष्ट्रोपनिषत्

रचयिता
आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कार
(महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्री
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्त्ता
महामण्डलेश्वरः स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरी
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थानम्, जयपुरम्

उत्सवा निर्धनानां न, सन्ति ते धनिनां ननु ।
निर्धनानां ततो द्वेषो, धनिनां राग एव हि ॥९६॥

उत्सव निर्धनों के नहीं होते, वे तो धनिकों के ही होते हैं । निर्धनों को तो उन उत्सवों से द्वेष होता है और धनिकों को राग ही ।

There are no festivals for the poor; they are only for the rich. The poor resent the festivals and the rich love them.

उग्र-दण्ड-भयं यावत्, कस्यापि स्यान्न चेतसि ।
सदाचारी न तावत् स्यात्, कोऽपि यत्नान्तरैः क्वचित् ॥९७॥

जब तक किसी के मन में उग्रदण्ड का भय नहीं होता है, तब तक कोई भी कहीं पर दूसरे यत्नों से सदाचारी नहीं बनता ।

Unless there is a fear from drastic/extreme punishment, nobody, nowhere can become good-natured by any other means

एकतायां सुखं सर्वं, तद्-भङ्गे सुखं नहि ।
एकत्वं बुद्धिमन्तो न, नाशयन्ति कदाचन ॥९८॥

एकता में सब सुख रहता है । उस एकता का भङ्ग हो जाने पर सुख नहीं मिलता, अतः बुद्धिमान् कभी भी एकता को नष्ट नहीं करते हैं ।

There is all kind of happiness in unity. There is no happiness if this unity is broken. Therefore, an intelligent person never destroys unity.

एकैकोऽपि क्षणोऽतीव, राष्ट्रस्य किं न मूल्यवान् ? ।
हा हन्त ! तस्य रक्षायै, ध्यानं नैव प्रदीयते ॥९९॥

राष्ट्र का एक एक भी क्षण क्या मूल्यवान् नहीं है ? हा ! खेद है, उस क्षण की रक्षा के लिये ध्यान नहीं दिया जाता ।

Isn't every moment of the nation priceless? Yes! It's a pity that nobody pays any attention to protect this moment.

एको देवः एका भाषा ,एका लिपिः एकः नेता ।
एकः धर्मः एका नीतिः, नित्यं सौख्यं दत्ते शान्तिम् ॥१००॥

एक देवता, एक भाषा, एक लिपि, एक नेता, एक धर्म और एक नीति सदा सुख शान्ति दिया करती है ।

One god, one language, one script, one politician, one dharma and one policy always bring peace and happiness.

एकः स्वदेशबन्धुश्चेद्, भिक्षते परदेशिनम् ।
तर्हीदं सर्वकाराय, किं न लज्जाकरं महत् ? ॥१०१॥

यदि एक स्वदेशी बन्धु परदेशी से भिक्षा माँगता है, तो क्या यह सरकार के लिये महान् लज्जाकारी नहीं है ?

Isn't it shameful for the government of the country that citizens are asking for help from the foreigners?

एकः सम्पद्यते यत्र, द्वितीयश्च विपद्यते ।
तत्र प्रशासनं किं न, दोषपूर्णं ? निगद्यताम् ॥१०२॥

जहाँ एक सम्पन्न हो जाता है और दूसरा विपन्न । क्या वहाँ प्रशासन दोषपूर्ण नहीं है ? बताओ ।

Isn't the fault of the administration if one becomes richer and other poorer? Do say.

एतावांस्तु धनी सर्वो, भवेदेवेह भूतले ।
तस्यावश्यकता येन, न तिष्ठेयुरपूरिताः ॥१०३॥

इतना तो धनिक इस भूतल पर सभी को होना चाहिये कि जिससे उसकी आवश्यकतायें अपूर्ण हुई न रहें ।

On this planet, everybody should be only so rich that their needs should not be unfulfilled